



पत्र-पुष्प



“साधनों को आधार बनाने के बजाए साधना के आधार से साधनों को यूज़ करो, ब्रह्माचारी बनो”

दादी जी की शुभ प्रेरणायें 22-06-22

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाली, डबल बाप को फालो कर समान बनने वाली, ब्रह्माचारी स्थिति में रह सदा सुख-शान्ति की शैया पर रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी वर्तमान वातावरण में सेवाओं के साथ-साथ अपनी अचल-अडोल एकरस स्थिति बनाने के लिए विशेष तपस्या कर रहे होंगे। जैसे ब्रह्मा बाप एकान्तप्रिय होने के कारण सदा अन्तर्मुखी रह स्वयं भी शान्ति और सुख के सागर में समाये रहे और अन्य आत्माओं को भी अपने शुद्ध संकल्प द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, सम्पर्क द्वारा शान्ति वा सुख की अनुभूति कराई, ऐसे हम ब्रह्मा वत्सों को भी निरन्तर तपस्वी स्वरूप में स्थित रह हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखनी है। आत्मिक दृष्टि वृत्ति का अभ्यास बढ़ाना है। समय प्रमाण अभी दया और करुणा के महान गुण को धारण कर स्नेह और अर्थॉरिटी, निर्मानता और महानता दोनों का बैलेन्स रख तीव्र पुरुषार्थ की रेस करनी है। अन्तर्मुखी, एकान्तप्रिय बनना है।

बाबा की हम बच्चों के प्रति जो आश है कि मेरा एक एक बच्चा आज्ञाकारी, वफादार बन अपनी मधुर वाणी और शीतल स्वभाव द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त बनें। हमें अब बाबा की इन आशाओं को पूर्ण कर विश्व कल्याण की महान सेवा करनी है। मीठा बाबा अव्यक्त वतन में रहते कैसे अपने बच्चों को निमित्त बनाए बेहद की सेवायें करा रहे हैं, वह समाचार तो आप सब सुनते, प्रभु लीला को देख वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! के गीत गाते उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हो ना। देखो, अभी शान्तिवन के विशाल प्रांगण में पूरे भारत से अनेक सन्त महात्माओं का, महामण्डेश्वरों का आगमन हुआ और सत्य ज्ञान की जो मूल प्वाइंटस हैं, उन्हीं विषयों पर विशेष सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। परमात्मा के दिव्य स्वरूप और उनके कर्तव्यों पर सभी ने अपने-अपने विचार रखे। सभी बहुत अच्छी अनुभूतियां करके गये हैं।

वैसे तो इस समय मधुबन के सभी स्थानों पर नये पुराने बाबा के अनेकानेक बच्चे बहुत अच्छी तपस्या कर रहे हैं। अभी जुलाई मास से टीचर्स बहिनें व समर्पित भाईयों के लिए विशेष योग तपस्या के कार्यक्रम चलेंगे। आप सभी भी अपने-अपने स्थानों पर विशेष तपस्या कर रहे होंगे। स्व-स्थिति द्वारा ही अनेक प्रकार की परिस्थितियों पर विजय हो सकती है, उसका साधन है ही तपस्या। तो जरूर सभी का इस बात पर पूरा ध्यान होगा। तपस्या का बल ही अनेक प्रकार की प्राब्लम को हल करेगा।

बाकी करनकरावनहार बाबा अपनी स्थापना के रहे हुए कार्य को विशेष अपनी सूक्ष्म सकाश से सम्पन्न करवा रहे हैं। उनकी टचिंग को कैच करने के लिए बहुत साफ स्वच्छ बुद्धि चाहिए। अभी समय प्रमाण वाचा सेवा के साथ अपनी वाइसलेस स्थिति द्वारा शुभ भावना और शुभ कामना के वायब्रेशन फैलाने की विशेष सेवा करनी है।

अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सबको दुआओं भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी



ये अत्यक्त इशारे



ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाले ब्रह्माचारी बनो

- 1) ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाले। संकल्प, बोल और कर्म रूपी कदम नैचुरल ब्रह्मा बाप के कदम-पर-कदम हो, जिसको फुट स्टेप कहते हो। मन-वाणी-कर्म के कदम ब्रह्माचारी हों। ऐसे ब्रह्माचारी का चेहरा और चलन सदा ही अर्न्तमुखी और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करायेगा।
- 2) ब्रह्माचारी आत्मा साइंस के साधन वा ज्ञान के साधन के आधार पर सदा सुखी नहीं रहते, लेकिन साधनों को भी अपनी साधना के स्वरूप में कार्य में लाते हैं। साधनों को आधार नहीं बनाते लेकिन अपनी साधना के आधार से साधनों को यूज करते हैं।
- 3) याद वा सेवा की सफलता का आधार है - पवित्रता। सिर्फ ब्रह्माचारी बनना, यह पवित्रता नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है - ब्रह्माचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाले, जिसको फालो फादर कहा जाता है क्योंकि शिव बाप के समान स्थिति में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करना है।
- 4) ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा आचार्य। ब्रह्मा आचार्यों का चित्र है सदा सुख की शैया पर आराम से अर्थात् शान्ति स्वरूप में विराजमान। तो चेक करो कि सदा पवित्रता की प्राप्ति, सुख-शान्ति की अनुभूति हो रही है? जीवन से दुःख अशान्ति का नाम-निशान भी समाप्त हो जाए।
- 5) पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं है लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता हो, इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो।
- 6) ब्रह्मा बाप समान हर बोल महावाक्य हो, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। ब्राह्मण अर्थात् जो ब्रह्मा बाप का आचरण वही ब्राह्मणों का आचरण अर्थात् कर्म हो। उच्चारण भी ब्रह्मा बाप समान, आचरण भी ब्रह्मा बाप समान हो - इसको कहेंगे फालो फादर।
- 7) ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्माचारी अर्थात् सदा ब्रह्माचारी बनना है, जिसको ही फालो फादर कहते हैं। इसमें अखण्ड रहने वाले को सर्व प्राप्तियाँ भी

अखण्ड अनुभव होती हैं। खण्डित पुरुषार्थी को प्राप्तियाँ भी अल्पकाल अनुभव होती हैं।

8) हरेक बच्चे का लक्ष्य ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण बनने का है - तो लक्ष्य प्रमाण सर्व लक्षण स्वयं में भरकर सम्पन्न बनो। इसके लिए विशेष धारणा है - सदा ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्माचारी और सदा पर-उपकारी।

9) जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण बनकर अपना कार्य सम्पन्न किया, किसी को भी नहीं देखा कि ये बच्चा ऐसा है, ये ऐसा है... इसलिए मैं सम्पूर्ण नहीं बन सकता। हर पार्ट बजाते हुए सम्पूर्ण बनें, सम्पन्न बने ऐसे मुझे बनना ही है। ऐसा संकल्प लेने वाला ब्रह्माचारी गुप चाहिए।

10) जैसे ब्रह्मा बाप एकान्तप्रिय होने के कारण सदा अन्तर्मुखी रहे, जिस कारण स्वयं भी सदा शान्ति और सुख के सागर में समाये रहे और अन्य आत्माओं को भी अपने शुद्ध संकल्प और वायब्रेशन द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, सम्पर्क द्वारा शान्ति की वा सुख की अनुभूति कराते रहे, ऐसे फालो फादर करो तब कहेंगे ब्रह्माचारी।

11) जैसे ब्रह्मा बाप निरन्तर तपस्वी मूर्त रहे, उनके स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। कोई कैसी भी रजोगुणी वा तमोगुणी संस्कार-स्वभाव वाली आत्मा हो, पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी, फिर भी उनके प्रति कल्याण का संकल्प वा भावना रही। ऐसे फालो फादर करो अर्थात् आत्मिक दृष्टि-वृत्ति का अभ्यास बढ़ाओ।

12) जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत वा हर चलन से चलता-फिरता अर्थॉरिटी स्वरूप देखा, ऐसे फालो फादर करो, स्नेह और अर्थॉरिटी, निर्मानता और महानता दोनों साथ-साथ दिखाई दें। वर्तमान समय इन दोनों बातों के बैलेन्स को अन्डरलाइन करो।

13) जैसे ब्रह्मा बाप को अन्त समय में किसी का भी बंधन बांध नहीं सका, कोई भी याद नहीं आया। एवररेडी का पार्ट, कर्मातीत स्टेज का पार्ट बजाया। ऐसे एवररेडी बनो। इसके लिए सब किनारे छोड़ एक बाप को अविनाशी सहारा बनाओ। किसी भी व्यक्ति, वैभव या वस्तु को सहारा नहीं बनाओ - यही है ब्रह्मा बाप का कदम, जिसे फालो करो।

14) जैसे साकार बाप जब कोई कमजोरी की लहर देखते थे तो

दिनरात सकाश देने की विशेष सेवा करते थे, प्लैन्स चलते थे, निर्बल आत्माओं में बल भरने का विशेष अटेन्शन रहता था। ऐसे अभी आप बच्चे भी सकाश देने की सर्विस करो। लाइट-माइट हाउस बनकर चारों ओर लाइट-माइट का प्रभाव फैलाओ।

15) जैसे नम्बरवन त्याग का एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप बनें। सब साधन होते हुए भी साधना में अटल रहे। ब्रह्मा के इसी त्याग ने संकल्प शक्ति की सेवा कराई, ब्रह्मा की तपस्या का प्रभाव आज तक मधुबन भूमि में अनुभव करते हो। ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या और सेवा का फल अभी तक मिल रहा है, ऐसे अपने त्याग, तपस्या और सेवा के वायब्रेशन विश्व में फैलाओ।

16) जैसे ब्रह्मा बाप ने जीवन के आरम्भ से हर कार्य में तुरत दान भी, तुरत काम भी किया। ब्रह्मा बाप की निर्णय शक्ति सदा फास्ट रही। तो फालो ब्रह्मा बाप। जब फालो करना है तो क्यों, क्या कैसे... यह व्यर्थ समाप्त हो जाता है। मन स्वच्छ, बुद्धि स्पष्ट होने से बाप समान डबल लाइट स्थिति सहज बन जाती है।

17) ब्रह्माचारी वह है जिसके हर कर्म से ब्रह्मा बाप के कर्म दिखाई दें। बोल, ब्रह्मा के बोल समान हो, उठना-बैठना, देखना, चलना-सब समान हो। ब्रह्मा बाप ने जो अपना संस्कार बनाया और शरीर के अन्त में भी याद दिलाया - निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी-यही ब्राह्मणों के नेचुरल संस्कार हों, तब कहेंगे ब्रह्माचारी। स्वभाव-संस्कार में बाप समान की नवीनता हो। मेरा स्वभाव नहीं लेकिन जो बाप का स्वभाव सो मेरा स्वभाव।

18) जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होते थे। सभी ने देखा या सुना है। अभी अव्यक्त रूप में भी साधारण में पुरुषोत्तम की झलक देखते हो! ऐसे फालो फादर। काम भल साधारण हो लेकिन स्थिति महान हो। चेहरे पर श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव हो। हर चलन से बाप का अनुभव हो-इसको कहते हैं ब्रह्माचारी।

19) जैसे ब्रह्मा बाप का स्नेह विशेष मुरली से रहा इसलिए मुरलीधर बना। भविष्य श्रीकृष्ण रूप में भी 'मुरली' ही निशानी दिखाते हैं। तो जिससे बाप का प्यार रहा उससे प्यार रहना-यही प्यार की निशानी है। इसी को कहेंगे ब्रह्मा बाप के प्यारे अर्थात् ब्रह्माचारी।

20) जो भी कर्म करो तो कर्म के पहले, बोल के पहले, संकल्प के पहले चेक करो कि यह ब्रह्मा बाप समान है? फिर संकल्प को स्वरूप में लाओ, बोल को मुख से बोलो, कर्म को कर्मन्द्रियों से करो। ऐसे नहीं कि सोचा तो नहीं था लेकिन हो गया। ब्रह्मा बाप की विशेषता विशेष यही है-जो सोचा वह किया, जो कहा वह किया, ऐसे फालो फादर करने वाले ही ब्रह्माचारी हैं।

21) जैसे ब्रह्मा बाप ने निश्चय के आधार पर, रूहानी नशे के आधार पर निश्चित भावी के ज्ञाता बन सेकेण्ड में सब कुछ सफल कर दिया; अपने लिए नहीं रखा, सफल किया। जिसका प्रत्यक्ष

सबूत देखा कि अन्तिम दिन तक तन से पत्र-व्यवहार द्वारा सेवा की, मुख से महावाक्य उच्चारण किये। अन्तिम दिवस भी समय, संकल्प, शरीर को सफल किया। तो ब्रह्माचारी अर्थात् सब कुछ सफल करने वाले। सफल करने का अर्थ ही है-श्रेष्ठ तरफ लगाना।

22) जैसे ब्रह्मा बाप सदा हर्षित और गम्भीर-दोनों के बैलेन्स की एकरस स्थिति में रहे, ऐसे फालो फादर। न कभी कोई बात में कम्प्यूज होना और न कभी किसी बात से मूड चेंज करना। सदा हर कर्म में फालो ब्रह्मा बाप करना तब कहेंगे ब्रह्माचारी।

23) ब्रह्मा बाप का सबसे प्यारा स्लोगन रहा - "कम खर्चा बाला-नशीन"। तो कम खर्चे में भी बाला-नशीन करके दिखाओ। खर्चा कम हो लेकिन उससे जो प्राप्ति हो वह बहुत शानदार हो। कम खर्चे में काम ज्यादा हो। एनर्जी वा संकल्प ज्यादा खर्च न हो। कम बोल हों लेकिन उस कम बोल में स्पष्टीकरण ज्यादा हो, संकल्प कम हों लेकिन शक्तिशाली हों-इसको कहा जाता है 'कम खर्च बाला-नशीन' अथवा एकानामी के अवतार।

24) जैसे ब्रह्मा बाप ने - एक बाप, दूसरा न कोई - यह प्रैक्टिकल में कर्म करके दिखाया। ऐसे बाप समान बनने वालों को भी फालो करना है। ब्रह्मा बाप के समान यही दृढ़ संकल्प करना कि कभी दिलशिकस्त नहीं होना है, सदा दिलखुश रहना है। माया हिलाये तो भी हिलना नहीं है। अगर माया हिमालय जितने बड़े रूप से भी आये तो उस समय रास्ता नहीं निकालना, उड़ जाना। सेकेण्ड में उड़ती कला वाले के लिए पहाड़ भी रुई बन जायेगी।

25) ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है। कोई कितना भी बिजी हो लेकिन ब्रह्मा बाप से ज्यादा बिजी और कोई हो ही नहीं सकता। कितनी भी जिम्मेवारी हो लेकिन ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी कोई के ऊपर नहीं है। तो जैसे ब्रह्मा बाप जिम्मेवारी निभाते भी कर्मयोगी रहे, स्वयं को करनहार समझकर कर्म किया, करावनहार नहीं समझा। ऐसे फालो फादर। कितना भी बड़ा कार्य करो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचाने वाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं तो थकेंगे नहीं। कम्प्यूज नहीं होंगे। एवरहैप्पी रहेंगे।

26) वर्तमान समय के प्रमाण फरिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म होती जाती है। सिर्फ ब्रह्माचारी बनना ही पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्माचारी के साथ ब्रह्मा बाप के हर कर्म रुपी कदम में कदम रखने वाले, ब्रह्माचारी बनो।

27) जैसे ब्रह्मा बाप को चलते-फिरते फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारे, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई। ऐसे फालो फादर करो। सदा देह-भान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, यही है ब्रह्माचारी स्टेज।

28) ब्रह्मा बाप लास्ट तक भी सदा अलर्ट रहे, जरा भी अलबेलापन

नहीं देखा। लास्ट दिन भी कितना अलर्ट रूप में अपने सेवा का पार्ट बजाया। शरीर कमजोर होते भी कैसे अलर्ट होके, आधार लेके नहीं बैठे और अलर्ट करके गये। तो जितना अलर्ट रहेंगे, फालो करेंगे, अलबेलापन खत्म हो जायेगा।

29) ब्रह्मा बाप सदा उपराम और साक्षी दृष्टा रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। अब इन संस्कारों में समानता लानी है, इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी बनना है। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनते हैं वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनते हैं। तो बीज यहाँ डालना है फल वहाँ लेना है।

30) जैसे ब्रह्मा बाप आदि देव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए सदा बच्चों को सम्मान दिया। अपने से भी ज्यादा बच्चों

का मान आत्माओं द्वारा दिलाया इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बनें। तो सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना।

31) आप बच्चों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्युटर है इसलिए क्या, कैसे के बजाए ब्रह्मा बाप की जीवन के कम्प्युटर से देखो। तो प्रश्नचित के बजाए प्रसन्नचित हो जायेंगे। प्रश्नचित हलचल बुद्धि है इसलिए प्रश्न का चिन्ह भी टेढ़ा है। प्रसन्नचित है बिन्दी। बिन्दी को किसी भी तरफ से देखो तो सीधा ही देखेंगे। और एक जैसा ही देखेंगे। चाहे उल्टा चाहे सुल्टा देखो। प्रसन्नचित अर्थात् एकरस स्थिति में एक बाप को फालो करने वाले।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

“आत्म अभिमानी बन एकाग्रता के अभ्यास को बढ़ाओ तो समस्याओं का समाधान मिल जायेगा”

(गुल्जार दादी जी 2007)

“त्याग, तपस्या और वैराग्य” – यह तीनों अगर हमारी जीवन में प्रैक्टिकल लाइफ में है, तो हम बाबा के समान बन जायेंगे क्योंकि हम सभी फलक से कहते हैं कि हमारा लक्ष्य है बाप समान बनना। तो जब हम सबका लक्ष्य है तो लक्षण भी जरूर धारण करेंगे। लेकिन होता क्या है? जब लक्षण धारण करने चलते हैं तो बीच-बीच में समस्यायें, कारण यह तो बनते ही हैं, और वो बनने ही हैं, आपने पहली मुरली जब सुनी होगी तो उसमें भी सुना होगा कि बच्चे माया आयेगी और भिन्न-भिन्न रूप से तूफान लायेगी लेकिन आपको विजयी बनना है। जन्मते ही बाबा ने यह महामंत्र हमको दे दिया कि माया का काम है आना और आपका काम है उस पर जीत पाना। लेकिन ... कहना माना कुछ किचड़ा ले लिया, इसलिए मम्मा कहती थी लेकिन नहीं कहो। कहो हाँ, करना ही है और हमको विजयी बनना ही है, यह हमारा प्रॉमिस है बाबा से।

बाबा कहते आपको कौन-सी माला में आना है? विजयी रत्न बनना है तो विजयमाला में आना पड़ेगा। तो हम लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि हमारे सामने यह जो विघ्न हैं, समस्यायें या कारण कहो भिन्न-भिन्न नाम हैं लेकिन यह सब हमारे पेपर हैं। हम समस्या समझते हैं.. यह हो गया, वो हो गया... लेकिन मम्मा कहती थी उसे देख तुरन्त घबराओ नहीं। घबराने से हमारा निर्णय ठीक नहीं होता है, घबराने से हमारे मन बुद्धि दोनों ही डगमग होते

रहते हैं, कभी हाँ कहेंगे, कभी ना कहेंगे तो कभी क्या कहेंगे! इसलिए बाबा कहते समस्याओं में परेशान वा हैरान नहीं हो करके यह सोचो कि हमको क्या करना है? भविष्य का सोचो, पास्ट का नहीं सोचो, यानि जो बात हो गई उसी बात को सोचते नहीं रहना। जो समस्या के निमित्त बनते हैं वो तो जाके आराम से सोये हुए होते हैं और हम क्या करते हैं! जो बात बीत गयी उसको ही सोचते रहते हैं, क्यों कहा या ऐसा क्यों किया? कैसे कहा? कब तक कहेगा? यह है कौन? यह कै कै... में चले जाते हैं।

वेस्ट थॉट के यह पाँच गेट हैं – क्यों, क्या, कब, कैसे और कौन। तो जब हम कै कै करते हैं तो हम कौआ बन जाते हैं। तो कौआ नहीं बनना। जब तक यह पाँच कै कै निकलेंगे नहीं तब तक यह वेस्ट थॉट खत्म होंगे ही नहीं क्योंकि बीती हुई बात को हम सोच रहे हैं और जबकि बीती हुई बात हमारे हाथ में नहीं है। बीती बातों को बिलोना माना बाँहों का दर्द मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा। तो यह जो पाँच शब्द हैं इसे हमको बुद्धि में आने नहीं देना है, यह फाटक बन्द करना है, इससे व्यर्थ संकल्पों की शुरूआत होती है। इसीलिए बाबा कहते हैं मन बुद्धि की एकाग्रता को बढ़ाओ, एकाग्रता होगी तो निर्णय ठीक होगा। गहन तपस्या के लिए भी एकाग्रता चाहिए। क्यों, क्या आ गया तो वेस्ट थॉट्स की रफ्तार बहुत तेज हो जायेगी। फिर उसको रोकना बहुत मुश्किल हो

जाता है और एकाग्रता भी नहीं रहती। ऐसे में फिर समस्या से मुक्त होना चाहते हैं या फिर योग लगाने बैठो तो कहाँ से योग लग सकता है? इसीलिए बाबा कहता है पहले तो यह जो क्यों, क्या के फाटक हैं... उनको बन्द करो।

हम त्रिकालदर्शी हैं तो क्यों का क्वेश्चन उठ सकता है क्या? तीनों कालों को जानते हैं और वर्तमान को ही नहीं समझ रहे हैं इसीलिए समस्या के टाइम क्यों का शब्द नहीं आना चाहिए। अगर व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है तो हमारी एकाग्रता खत्म हो जाती है। और एकाग्रता खत्म होने के कारण जो समस्या का हल होना चाहिए वो तो होता ही नहीं है, फिर समझते हैं ड्रामा में शायद मेरा पार्ट ही ऐसा है... ऐसा सोचते और दिलशिकस्त हो जाते हैं। तब बाबा कहते हैं कि तपस्या माना मन बुद्धि की एकाग्रता। तपस्या माना योग में बैठ जाना नहीं, योग लगेगा ही नहीं क्योंकि मन और बुद्धि एकाग्र है ही नहीं तो कैसे योग लगेगा? और तपस्या कैसे होगी? तो पहले यह चेक करो कि हमको अगर तपस्वी बनना है, तपस्या में सक्सेस होना है तो पहले मेरा मन एकाग्र हो। ऐसे नहीं मैं अभी सोचूँ और मन आधा घण्टे के बाद जाके मेहनत करके ठीक हो। उसमें आधा घण्टा तो चला गया।

तो अगर आप अच्छी तरह से तपस्या करना चाहते हैं तो मन और बुद्धि को एकाग्र करो। एकाग्रता का आधार है कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर। रूलिंग पॉवर का मतलब यह है कि मैं सचमुच अपने को आत्मा मालिक हूँ, रूलर हूँ... ऐसे समझके चलना क्योंकि जब तक हम मन के मालिक के रूप की स्मृति में नहीं रहेंगे तब तक मन वश में हो नहीं सकता है। तो मन एकाग्र होने के लिए हमको पहला पाठ पक्का करना होगा मैं आत्मा मालिक हूँ। आत्मा का पाठ अगर हमारे मन में पक्का नहीं है, तो कितना भी पुरुषार्थ करेंगे तो भी आप किसी बात में सक्सेस नहीं हो सकेंगे। तो जब तक चलते फिरते आत्मा का पाठ हमारा पक्का नहीं है तो परमात्मा से कनेक्शन जैसे हम चाहते हैं वैसे नहीं होगा क्योंकि हम दूसरों को समझाते हैं, आप भगवान को याद करना चाहते हैं तो भी क्यों नहीं याद आता है? क्योंकि अपने को शरीर समझके करते हो, अपने को आत्मा समझके करो तो परमात्मा याद आयेंगे, ऐसे दूसरों को पाठ पढ़ाते हैं। तो पहले यह चेक करें हम आत्म-अभिमान की स्टेज में पास हैं? क्योंकि देहभान कैसे छूटेगा? आत्म-अभिमान बनने से।

हम लोगों ने शुरू में इसका अभ्यास बहुत किया है, चलते फिरते भी इसका अभ्यास किया है। अभी तो आने से ही चाहे घर की सेवा, चाहे बाहर की सेवा में लग गये। आत्मा का पाठ हम लोगों को पक्का करना चाहिए। मैं आत्मा रूप में स्थित नहीं होंगी तो मन मेरा क्यों मानेगा? तो सदा याद रखो मैं आत्मा करावनहार हूँ कर्मन्द्रियों द्वारा, और बाबा हमारा करावनहार है इसलिए मैं निमित्त

हूँ। अगर एक करावनहार शब्द भी हमको याद आवे तो उसमें मजा है ना, मालिक बनके मैं करा रही हूँ। तो हम आत्मा मालिक हैं, करावनहार हैं, यह मेरी कर्मन्द्रियाँ जो हैं वो कर्मचारी साथी हैं क्योंकि इनके बिना तो काम नहीं चल सकता है ना। तो पहले आत्मा का पाठ चेक करो, हम लोगों का फाउण्डेशन ही यह है। सारा दिन कर्म करते यह याद रहता है कि मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ फिर बाबा जो भी स्वमान देता है... उसे याद करो।

तो ये चेक करो, ये तपस्या करो – मैं आत्मा हूँ, आत्मा समझने से ऑटोमेटिकली वैराग्य तो आ ही जायेगा क्योंकि आत्मा को कुछ नहीं चाहिए। आत्मा को न खाने-पीने की आसक्ति हो सकती है, न पहनने की, न कनेक्शन की कुछ भी उसको आसक्ति नहीं है। तो मैं आत्म-अभिमान बनके चल रही हूँ! आत्मा समझने से एक बाबा दूसरा न कोई, नहीं तो बीच में दूसरे तीसरे हो जाते हैं। चाहे अपने शरीर का ही हो जाता है, बांडी-कॉन्सेस, मैं-पन ही आ जाता है। तो कारण क्या है कि आत्मा जो फाउण्डेशन है, आत्म-अभिमान बनने का वो कच्चा है। हरेक अपने आपको चेक करे, सारा दिन मैं चलती हूँ तो यह समझती हूँ कि मैं आत्मा इस शरीर द्वारा कराने वाली हूँ? कि मैं मेरा मिक्स हो जाता है? और मालिकपने में तो और ही नशा रहेगा ना, खुशी रहेगी। वो खुशी और नशा क्यों नहीं रहता है क्योंकि अपने को आत्मा समझके सेवा नहीं करते हैं या कोई भी काम नहीं कराते हैं। मैं कर्मन्द्रियों से कराने वाली हूँ, इस तरह से जब तक आप अपना मालिकपन का स्वरूप धारण नहीं करेंगे तब तक हमारी कर्मन्द्रियाँ हमको धोखा देती रहेंगी।

आप कितना भी कोशिश करते रहो कि हमारे को क्रोध नहीं आवे, पाँच फुट का व्यक्ति एक छोटी-सी जबान और इतनी छोटी-सी आँख पर कन्ट्रोल नहीं कर सकता है क्योंकि जब क्रोध आता है तो जुबान और आँखों से ही तो पता चलता है। कारण, मालिकपन है ही नहीं। जब मालिक है ही नहीं तो मन क्यों मानेगा, आँख क्यों नहीं हमको धोखा देगी? इसीलिए बाबा हर मुरली में कहते हैं आत्म-अभिमान बनो, शरीर के भान में नहीं आओ, अशरीरी बनो। आजकल तो बाबा बार-बार यही याद दिला रहा है कि बच्चे अभी घर चलना है। घर किसको जाना है? आत्मा को। तो आत्म-अभिमान बनने का जब अभ्यास होगा तब तो बाबा के साथ घर जा सकेंगे। तो बाबा ही मेरा संसार है। संसार में कई चीज़ें भले हों परन्तु हमारे लिए बाबा ही एक संसार है। तो आत्मा समझने से बाबा हमारा संसार प्रैक्टिकल अनुभव होता है। नहीं तो इस शरीर के भान से कई बातें आती हैं। लेकिन साधना के स्वरूप में स्थित होके साधनों को यूज करो। होता क्या है कि साधनों में लग जाते हैं तो साधना भूल जाते हैं, चीज़ों में ही लग जाते हैं।

अभी आप एक सेकण्ड आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाओ

और सोचो आत्मा को कुछ चाहिए... आटोमेटिकली बेहद का वैराग्य आ जायेगा क्योंकि आत्मा को सिवाए परमात्मा के और कुछ है ही नहीं। तो आत्म-अभिमानी बनने से स्वतः ही शरीर का ही त्याग हो जाता है फिर वैराग्य तो आटोमेटिकली हो गया ना। नहीं तो हम एक-एक चीज़ का त्याग और वैराग्य करते रहेंगे, क्या? अपने को आत्मा समझेंगे तो पहनने खाने पीने, घूमने फिरने के संकल्प आयेगे क्या? नहीं। और क्या है कि हमारे कई जन्मों के संस्कार भी तो हैं ना, इसलिए वो संस्कार संकल्प के रूप में वार कर देते हैं फिर उसी में परेशान होते हैं, पुरुषार्थ करते हैं लेकिन नहीं होता है ना, फिर आखिर में कहते हैं कि मैं ऐसा नहीं हूँ, मेरी शक्ल ही ऐसी है, मेरा नेचर ही ऐसा है तो यह तो कहने में आता है लेकिन हमको यह समझना चाहिए कि मैं आत्मा हूँ पक्का।

हम जहाँ भी रहते हैं तो आपस में मिलने में या रहने में, कार्य-व्यवहार करने में थोड़े बहुत संस्कार जो हैं वो टक्कर खाते हैं। तो हम बाहर वालों को तीन बातें सुनाते हैं वो आप भी करो तो बहुत सहज संस्कार मिलन हो सकता है:

1) जब भी किससे मिलते हो तो मुस्कराते हुए मिलो। मुस्कराना तो सभी को आता है ना। मानो क्रोध वाला आपके सामने आता है, आयेगा तो सही ना। चलो आपस में भी कभी-कभी तो माया आ जाती है ना, तो जब वो जोश में आता है, बहुत कुछ बोलता है और आपने एक ही शब्द बोला लेकिन वो एक शब्द ही काफी है। उससे आग और ही भड़केगी इसलिए आप क्या करो, ऐसे समय पर भी मन से मुस्कराके मिलो।

2) दूसरी बात कोई भी मिलता है तो उसको कुछ न कुछ पानी या शरबत पिलाया जाता है, तो आपके पास बना बनाया शरबत एवररेडी है। वो कौन-सा है? मीठे बोल रूपी शरबत सभी के पास है? मीठे बोल का शरबत उसको पिलाओ।

3) तीसरी बात उसको कुछ खिलाया भी जाता है। तो आप सबके पास बनी-बनाई मिठाई है। दिलखुश मिठाई तो सभी के पास है ना। तो वही दिलखुश मिठाई उसको खिलाओ अर्थात् अगर आप दिलखुश होके उससे मिलेंगे, तो उसकी भी दिल खुश होगी, तो आप दिलखुश मिठाई खिलायेंगे तो उसका कल्याण होगा। तो यह तीन बातें आप जरूर करो। ठीक है। अच्छा – ओम् शान्ति।

भाई-बहनों के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर

(16-3-2006)

प्रश्न:- बाबा हमारे में ट्रस्ट रखता है और हम भी बाबा में विश्वास रखते हैं, बाबा ने हमको ट्रस्टी बनाया है, अगर किसी कार्य से हमारा ट्रस्ट समाप्त हो जाता है तो हम उसको कैसे ठीक करें?

उत्तर:- ज्ञान-मार्ग में जब आते हैं तो जैसे बाबा का हमारे में विश्वास है, ऐसे हमारा भी बाबा में विश्वास हो। पहले है आत्म-विश्वास, फिर है परमात्म विश्वास क्योंकि माया के अधीन होने कारण अन्दर अपने आपसे विश्वास खत्म हो गया था। अगर था भी तो अभिमान वाला विश्वास था। ईश्वर को याद भी किया होगा तो अपना नाम कमाने के लिए, ईश्वर का नाम केवल नाम-मात्र लेंगे इसलिए सच्चाई और प्यार के आधार पर परमात्म के साथ का अनुभव कर सकते हैं, वही अनुभव आत्म विश्वास बिठाता है।

विश्वास और ट्रस्ट में फर्क है। आत्मा में परमात्मा के ज्ञान और परमात्मा के प्यार से विश्वास आता है। परमात्मा जैसे हमें पालना दे रहा है, इससे आत्मा को अपने ऊपर विश्वास है। फिर सेवा व सम्बन्ध के व्यवहार में जो सच्चाई व ऑनेस्टी है, उससे ट्रस्ट बैठता है और अगर ऑनेस्टी की कमी है, तो वो बहुत समय के बाद महसूस करते हैं। फिर अपना भी ट्रस्ट अपने से खत्म हो जाता

है। परमात्मा ने हम सबमें कितना विश्वास रखा तो भी मैंने क्या किया? मन, वचन, कर्म मेरा कैसा रहा? परमात्मा ने अपनी दृष्टि से, प्यार से, समझानी से, भावना से हम आत्माओं को स्वमान की सीट पर बिठाने के लिए कितनी मेहनत की है। लेकिन हम उस स्वमान को छोड़ कहाँ थोड़ा भी मान शान मिला, तो उसी में हम खुश रहते हैं। फिर दूसरों को दोषी बना करके कहेंगे यह मेरे में ट्रस्ट नहीं रखते हैं। अगर विदेही रहने की प्रैक्टिस है तो ट्रस्टी हो करके रहने का ध्यान रहेगा।

प्रश्न:- हम एक तो यज्ञ रक्षक बनें, दूसरा यज्ञ के लिए प्यार हो, तीसरा यज्ञ वत्स और ब्राह्मणों के लिए प्यार हो, चौथी बात हमारा यज्ञ के प्रति रिस्पेक्ट भी हो, उसके लिए ऐसा क्या पुरुषार्थ करें? आप तो उसकी मूर्त हो, आपके एक एक बोल से, गुण से हर कर्तव्य से ऐसे लगता है कि आपकी रग-रग में बाबा के प्रति और यज्ञ के प्रति प्यार है, वो हमारे अन्दर भी आये, यह कैसे हो सकता है?

उत्तर:- प्लीज़ आप कैसे शब्द नहीं बोलो। जो बात जिसको करनी होती है वो कभी छोड़ते नहीं हैं। जो काम नहीं करना चाहिए, अगर

आप उसे रोकेंगे तो भी वह करेगा। बिगर पूछे भी करेगा, छिपाके भी करेगा, तो क्या यह नहीं कर सकते हैं? जैसे माया अपना बनाने में होशियार है। खाने और पहनने से ले लो, भगवान के घर का खाते हैं, भगवान के घर का पहनते हैं, यह भी अगर भान हो तो ध्यान रहेगा। जो बाबा के सच्चे बच्चे हैं उनकी यज्ञ से पालना होती है। यज्ञ में दान किया हुआ खाना, सहज बात नहीं है। तो पहले यज्ञ क्या चीज़ है वो समझें। यज्ञ में रहते कभी किसी से कोई बात के लिए भेंट नहीं करना चाहिए। अपने आप अन्दर से आना चाहिए कि मैं सूखी रोटी खा करके भी खुश रहूँ, यह है यज्ञ के लिए प्यार। कम से कम बाबा ने अपना बनाके गोदी में तो बिठाया है। जिसका यज्ञ से प्यार नहीं है, यज्ञ भी उसको कैसे प्यार करेगा? यज्ञ का खाना हज़म करना, ताकत चाहिए। बाबा को आँख खोलके देखो और बाबा से जो मिलता है उसको यूज करो।

प्रश्न:- कईयों को संकल्प आता है कि हम बहुत देर से आये हैं। कोई अपने लौकिक कार्य अर्थ, या सेवा अर्थ यज्ञ से दूर रहते हैं तो उसको कैसे लगे कि हम बाबा के, यज्ञ के और दादियों के नजदीक है? इसके लिए वह कैसा पुरुषार्थ करे?

उत्तर:- किसको इच्छा या उमंग है कि हमें यज्ञ से वा बड़ों से समीपता का सुख लेना है? यह अलौकिक सुख का अनुभव करना भी जरूरी है, जो यह समझते हैं वो हाथ खड़ा करें। दूर खुद रहते हैं तो समीप आने की अन्दर खींच नहीं होती है। कोई व्यक्ति या वैभव की आकर्षण जिसको जब तक है तब तक बाबा के नजदीक आने की ताकत नहीं है। भले दूर रहें या पास रहें, स्थूल बात नहीं है। दूर रह करके पास तभी रह सकते हैं जब उनके अन्दर ऐसी भावना हो कि बाबा मैं सदा आपके पास रहूँ...। सूक्ष्म बाबा के समीपता का जो सुख है, वो ईश्वरीय परिवार को भी ऐसे सुख का अनुभव कराता है। जिसको यह सुख महसूस नहीं है, वो दूर फील करता है।

कोई कितना भी अच्छा हो, पर उसमें किसी की आँख न डूबे, तो जहाँ भी हो बाबा के नजदीक का अनुभव होगा। यज्ञ की हड्डी सेवा करो तो हड्डी सुख मिलेगा, हड्डियां मजबूत हो जाती है। हड्डी सेवा से ही तो हमारी ब्राह्मण लाइफ बनी है, इससे ही माया से छूटे हैं। जो यज्ञ सेवा में नाजुकपना दिखाता है या यज्ञ में रहते हुए किसी के दोष देखता है, उसको समीपता के सुख का अनुभव नहीं हो सकता है। किसी की ग्लानी की माना यज्ञ की इज्जत गई, तो हम यह काम नहीं कर सकते हैं। तो इतना यज्ञ के लिए इज्जत हो, ध्यान हो तो सब नजदीक बुलायेंगे। तो कहाँ भी रहो, लेकिन अपनी स्थिति ऐसी ज्ञानयुक्त, योगयुक्त हो जो हमारे से एक सेकण्ड भी बाबा अलग दिखाई नहीं पड़े। जहाँ भी पाँव रखें वहाँ बाबा की हाज़िरी का अनुभव हो जो सब खुश हों। तो समीप आना माना सबसे गुण उठाओ, गुणवान बनो और गुणदान करो।

संकल्प में इतनी शुद्धि हो, जो दूसरों को भी अन्दर से शान्ति की शक्ति मिले। जब आत्मा सुई के ऊपर से जंक उतरे तब ईश्वरीय परिवार के संग का रंग लगे। तो हमको पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो जंक उतरी हुई हो, फिर से ऐसी कोई गफलत के कारण जंक न चढ़ जाये। तो इतना लायक बनें जो बाबा भी हमें चुम्बक की तरह खींचे। इतनी अपने आप पर मेहरबानी करना तब ईश्वरीय आकर्षण से मायाजीत बन सकेंगे।

प्रश्न:- दादी, ऐसे तो कोई भी नहीं चाहता है कि माया का कोई रंग वा जंक लग जाये लेकिन किसी कारण से कभी किसी से कोई गलती हो जाती है, तो उसकी गलतियों को कैसे समाप्त करें और वह क्या पुरुषार्थ करे?

उत्तर:- फौरन महसूस करना और सच बता देना और फिर से ऐसी गलती मेरे को नहीं करना है, ऐसा दृढ़ संकल्प करे क्योंकि बाबा ने हमको कर्मों के गुह्यगति की ऐसी रोशनी दी है। हम जो अच्छा कर रहे हैं वो अपने लिए बीज बो रहे हैं। उस बीज का फल अच्छा निकलना ही है। माली एक बीज बोता है और उसका फल अनेक खाते हैं। तो हमारे संकल्प में इतनी शुद्धि हो, वाणी ऐसी हो, बाबा ने जो सुनाया है वही वाणी मेरे से निकले। धारण किया हुआ मुख से निकले और कुछ देह अभिमान के वश मिक्स न हो, तब हमारा इम्पेशन इतना लवली और राइट हो जाता है। जितना बड़ा महारथी है उसके लिए छोटी बात भी बड़ी है। तो हमको इतना ध्यान रखना है, जितनी बड़ी पढ़ाई है, जितना बड़ा परिवार है, जितनी बड़ी प्रालम्भ है... अगर इतना ख्याल रहेगा तो बदल सकते हैं। तो हमारे ऊपर बहुत बड़ी सारे विश्व की जिम्मेवारी है। हमें प्रैक्टिकली परिवर्तन करके असली स्टेज पर आना है।

प्रश्न:- हम बी.के. भाई बहनों के सामने कई प्रकार के सरकमस्टांसेस आते हैं, उसमें रहते हुए कोई भी मन के अन्दर दुःख की फीलिंग न आये, अपनी स्टेज से हम कभी नीचे न आयें, उसके लिए क्या करें?

उत्तर:- दुःख शुरु हुआ तो सुख भूल गया। सुखकर्ता बाप के सुख को भूले तो दुःख महसूस हुआ। इतना बाबा ने सुख दिया है, सहनशक्ति दी है। जो प्रकृति के अधीन हैं उन्हीं को दुःख फील होता है। जब आत्मा सतोप्रधान बनने का ध्यान रखती है, तो उसे दुःख नहीं होगा। बाबा के सामने ऐसी बहुत सी परिस्थितियाँ आई पर बाबा को कभी दुःख की फीलिंग नहीं आई। वे कभी अपनी ऊंची स्टेज से नीचे नहीं आये। ऐसे हमें भी बाबा के समान बनना है। सी फादर, फॉलो फादर। सम्बन्ध में गुण भले उठाओ, सम्बन्ध में स्नेह भले रखो, पर फॉलो बाबा को ही करो। मतभेद में कभी नहीं आना है, एकमत बनना है। भिन्न-भिन्न मत, भिन्न-भिन्न नेचर वालों को बाबा श्रीमत के आधार से एकमत बना रहा है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन (मधुर महावाक्य)
कर्मों की गहन गति को जान श्रेष्ठ कर्म करो, कदम-कदम
श्रीमत की मर्यादाओं पर चलो

(1998)

1) प्यारा बाबा रोज हमें भिन्न-भिन्न मधुर महावाक्यों से इशारा करता बच्चे निरन्तर याद में रहो, यह रोज की मुरली का मन्त्र है और भी भिन्न-भिन्न प्वाइन्ट्स से बाबा हमें शिक्षायें देता। जैसेकि बाबा कहते तुम बच्चे एक ब्रह्मा बाप के कदम के पीछे कदम रखते हुए चलो। तो यह बातें सुनते, सूक्ष्म अन्दर जाकर सभी अपने आपको चेक करो कि मैं कितना बाप के ऊपर बलिहार हूँ?

2) बाबा ने हमें गुह्य से गुह्य ज्ञान देकर, गुह्य ते गुह्य राज सुनाये हैं। कर्मों की गति अति गहन है। हमारे कर्मों को देख दूसरे भी हमारे कर्मों से प्रभावित होते हैं क्योंकि बाबा ने हमें कहनी नहीं सिखलाई, करनी सिखलाई है। तो अमृतवेले से लेकर रात तक यह अटेंशन रहता है कि हमारा कर्म कितना श्रेष्ठ है?

3) एक कर्म है जो हम प्यारे बाबा की याद से विकर्म विनाश करते हैं अथवा अकर्म बनते हैं। दूसरा कर्म है, जिससे कर्म की लेन-देन हो सकती है। एक कर्म अकर्म बनता, दूसरा कर्म से कर्म बनता। तीसरा कर्म से विकर्म बनता।

4) हम सभी दुनिया के लिए लाइट हाउस हैं अथवा सर्चलाइट देने के निमित्त हैं। सर्चलाइट के बीच अगर कोई डिफेक्ट हो जाये तो सामने आने वाला जो शिप है, उसे सही रास्ता नहीं मिलेगा। हमारी मन्सा के सूक्ष्म संकल्प ऐसे हों जो चारों तरफ हमारे वायब्रेशन फैलें और दूसरों को प्रेरणा मिले। आकर्षण हो, साक्षात्कार हो। हम सभी ऐसे एकजाम्बुल रहें, खुद को ऐसा समझें कि मैं जो कर्म करूँगा मुझे देख हरेक करेगा। तो इसके लिए हरेक जवाबदार है। जैसा मैं कर्म करूँगा मुझे देख सब करेंगे - यह सूक्ष्म की जवाबदारी हम सबके ऊपर है। हम जिस तरह भी अपनी स्थितियाँ रखेंगे ऐसी स्थिति का वायब्रेशन फैलेगा।

5) हम सबके हर संकल्प, हर कर्म में, हर वक्त बेहद ईश्वरीय परिवार की जिम्मेदारी है, सूक्ष्म वायब्रेशन से शक्ति देने की। तो हमारे कर्मों की गति बड़ी गहन है। प्यारे बाबा ने जो हमें श्रीमत दी है उसी श्रीमत पर हमें कदम बाय कदम चलना है। श्रीमत में बाबा ने कहा है कि तुम्हें श्रीमत है मर्यादा पुरुषोत्तम रहो। जितना हम मर्यादा पुरुषोत्तम बनेंगे उतना हमें देख दूसरे भी मर्यादा में रहेंगे इसलिए जैसे हमें मर्यादा में श्रीमत मिलती कि अमृतवेले उठकर बाबा की याद में रहना है, यह हम हरेक की जिम्मेदारी है। 2. हमारी मर्यादा में ज्ञान सागर बाबा जो ज्ञान रत्नों की मुरली नित्य सुनाता है, उसे सुनना है, मनन करना है, यह हमारी मूल जिम्मेदारी है। अगर इस श्रीमत का पालन किसी भी कारण से नहीं करते तो यह भी अलबेलापन है, इसमें सूक्ष्म अपनी सुस्ती है। हम ऐसा मानती कि बाबा की श्रीमत पर चलने वाले के ऊपर आशीर्वाद है, दुआयें हैं, वरदान है। परन्तु अगर हम कदम-कदम श्रीमत पर नहीं चलते तो भगवान की दुआयें और वरदानों से मिस होते, दूसरा श्रीमत की अवज्ञा बहुत बड़ा सूक्ष्म पाप का भागी

बनाती हैं। यह भी बोझ हो जाता है, जो बोझ अवस्थाओं को ऊंचा चढ़ने में विघ्न बनता है।

6) बाबा की श्रीमत है बच्चे मन-वचन-कर्म से सेवा करो। अगर हम मन-वचन-कर्म से सेवा नहीं करते हैं तो यह भी एक इन्डायरेक्ट सेवा लेते हैं और उसका भी बहुत बोझ चढ़ता है। जैसे कहा जाता है - आये हैं हम पुण्य कमाने लेकिन पुण्य कमाने के पीछे पुण्य की गंवाई हो जाती है। और फिर उसमें अपनी श्रीमत की धारणा नहीं रहती तो पुण्य के बदले पाप हो जाता है। फिर सूक्ष्म विकर्म विनाश नहीं होते तो मायाजीत भी नहीं बन सकते।

7) जैसे बाबा कहते तुम बच्चे किसी को दुःख न दो लेकिन यह मर्यादाओं का उल्लंघन करना भी सूक्ष्म दुःख देना है। इससे भी पुण्य के बदले पाप का बोझ चढ़ता है इसलिए हमारे कर्मों की गति बड़ी गहन है। जो भी कर्म हम करते हैं, सेवा करते, पालना करते, पालना लेते हरेक में बहुत बड़ी कर्मों की मिशनरी काम करती है। हमारे संग से दूसरे को भी श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा मिले। हमारा ऐसा संग न हो जो किसी को संगदोष लग जाए। और ही वह हमारे से ऊंच दृष्टि लेने के बदले नफरत, ईर्ष्या, द्वेष आदि.. में आये, उसमें रीस पैदा हो। करनी है रीस लेकिन हो जाती है रीस - उसी से बोझ चढ़ता है।

8) चलते-चलते बहुतों में देह-अभिमान बढ़ता जाता है। एक होता है देह-अभिमान, दूसरा होता है मैं पन का नशा। देह-अभिमान फिर भी मोटा है लेकिन मैं पन का नशा बहुत सूक्ष्म है। चाहे अपनी बुद्धि का, चाहे अपनी सेवाओं का, चाहे किसी भी प्रकार का अगर नशा चढ़ता है तो वह नशा भी नुकसान करता है। नारायणी नशे के बदले देह-अभिमान का नशा चढ़ गया तो बहुत नुकसान होता। कोई को भाषण का भी नशा चढ़ जाता, तो वह भी नशा नहीं चढ़ना चाहिए, उससे भी बड़ा नुकसान होता।

9) नशे की निशानी है - 1. सूक्ष्म समझते हैं वाह रे मैं! 2- स्वयं को ही राइट समझते, दूसरों को नीचा समझते। वह कभी नम्रचित नहीं रह सकते। जो नम्रचित नहीं बनेगा वह निर्माण का काम भी नहीं कर सकेगा इसलिए हम सभी निमित्त हैं इस शब्द को कभी भूलो नहीं। हम निमित्त वालों को सदैव कदम-कदम पर सावधानी चाहिए। उठो, चलो, बैठो, खाओ, पिओ, पहनो सब कर्मों की गति अपनी है इसलिए हर कदम में बहुत-बहुत ध्यान रखना जरूरी है।

10) बाबा के हम सभी बच्चे दर्शनीय मूर्त हैं। इस चेहरे से, सूरत से बाबा की सीरत दिखाने के निमित्त हैं। तो हम दर्शनीय मूर्त की धारणा कितनी श्रेष्ठ होनी चाहिए, कितनी महान होनी चाहिए यह हरेक खुद देख सोच सकते हैं इसलिए जो भी कोई सूक्ष्म वृत्ति है उसको परिवर्तन करो। अन्तर्मुखी बनो, बाह्यमुखता की वृत्तियों का परिवर्तन करो। बाह्यमुखता की वृत्तियों को हमें कछुए की तरह समेटकर अन्तर्मुखी बनना है।